vke d ckxk dk ic/ku

ik"k.k ic/ku एक औसत वयस्क वृक्ष (10 वर्ष या अधिक आयु) हेतु 2.17 कि.ग्रा. यूरिया, 3.12 कि.ग्रा. सिंगल सुपर फॉस्फेट एवं 1.67 कि.ग्रा. म्यूरेट ऑफ पोटाश तने से लगभग 1.5 मीटर दूरी पर बनायी गयी 25 सें.मी. चौड़ी नाली में डालना चाहिए। इसके अतिरिक्त मृदा की भौतिक एवं रासायनिक दशा में सुधार हेतु 30–40 कि.ग्रा. गोबर की सड़ी खाद प्रति पेड़ डालना उचित पाया गया है। बागों में सूक्ष्म पोषक तत्वों का प्रबन्धन भी अत्यंत आवश्यक होता है, अतः उर्वरकों के साथ जिंक सल्फेट (200 ग्रा. प्रति पेड़), बोरैक्स (100 ग्रा. प्रति पेड़) एवं कॉपर सल्फेट (150 ग्रा. प्रति पेड़) भी मिट्टी में मिलाना चाहिए।

ty ic/ku नये लगे पौधों में 2–3 दिनों के अन्तराल पर तथा जब पौधे फल देने लगें तो फल लगने के बाद तीन बार पानी देना चाहिए। फल लगने वाले बागों में पहली सिंचाई फलों के काँच की गोली के बराबर की अवस्था में तथा दूसरी सिंचाई इसके 20 दिनों के उपरान्त करनी चाहिए। तीसरी सिंचाई दूसरी सिंचाई के 20–25 दिनों के उपरान्त करें। सिंचाई पेड़ के थालों में ही करनी चाहिए।

idk'k ic/ku आम के पेड़ों में यदि कटाई–छंटाई न किया जाए तो लगभग 15–20 वर्ष की वृद्धि के बाद अन्दर की कैनोपी में सूर्य का प्रकाश नहीं पहुँच पाता है और फलोत्पादन पर इसका दुष्प्रभाव पड़ने लगता है। अतः आम के पेड़ों में सेन्टर ओपेनिंग अर्थात् पेड़ के मध्य में स्थित एक शाखा को उसकी उत्पत्ति के स्थान से दिसम्बर माह में काट कर हटा देने से पेड़ में प्रकाश की उपलब्धता बढ़ जाती है, तथा पेड़ की ऊंचाई भी कम हो जाती है।

dhV] jkx ,o nfgd fodkjk dk ic/ku

leL;k	ic/ku@mipkj
Hkuxk dhV	जब बौर 8–10 सें.मी. का हो उस वक्त इमिडाक्लोप्रिड (0.005%) का प्रथम छिड़काव (0.3 मि.ली. प्रति ली. की दर से)। फल बनने के बाद थायोमेथाक्जाम (0.008%) का दूसरा छिड़काव (0.25 ग्राम प्रति ली. की दर से) तथा आवश्यक होने पर तीसरा छिड़काव कार्बरिल (0.2%) का करें।
xf>;k dhV	दिसम्बर माह के प्रथम पखवाड़े में आम के तने के चारों ओर गहरी जुताई करें। तने पर 400 गेज की पॉलीथीन की 25 सें.मी. चौड़ी पट्टी के ऊपरी तथा निचले किनारों को सुतली से बांधें। निचले सिरे पर ग्रीस लगा कर सील कर दें। जनवरी माह में क्लोरपाइरीफॉस चूर्ण (1.5%) का 200 ग्रा. प्रति पेड़ की दर से तने के चारों ओर बुरक दें। यदि कीट पेड़ पर चढ़ गये हों तो कार्बोसल्फॉन (0.05%) या डाइमेथोएट 0.06% (2.0 मि.ली. प्रति ली. पानी में) का 15 दिनों के अन्तराल पर दो छिड़काव करें।

lEL;k	ic/ku@mipkj
Rkuk o/kd dhV	साइकिल की तीली से सुण्डियों को निकालें तथा डी.डी.वी.पी. के 0.05% घोल में रूई को भिगो कर तने में किए गए छेद में डाल कर गीली मिट्टी से बन्द करें।
'kV xky lkbyk	क्वीनालफॉस 0.05% (2 मि.ली. प्रति ली. पानी में) या डाइमेथोएट 0.06% (2 मि.ली प्रति ली. पानी में) का प्रथम छिड़काव अगस्त के दूसरे सप्ताह में तथा अगले दो छिड़काव 15 दिनों के अंतराल पर करें।
jkxk dk ic/ku	
[kjk ;k nfg;k	घुलनशील गंधक 0.2% (2 ग्रा. प्रति ली. पानी में) से प्रथम छिड़काव बौर आने के तुरन्त बाद करें। ट्राइडीमॉर्फ 0.1% (1 मि.ली. प्रति ली. पानी में) से द्वितीय छिड़काव 10–15 दिनों के उपरान्त करना चाहिए। आवश्यकता पड़ने पर डाइनोकैप 0.1% (1 मि.ली. प्रति ली. पानी में) से तीसरा छिड़काव 10–15 दिनों के उपरान्त करें।
,UFkDukt	इसके नियंत्रण हेतु कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 0.3% (3 ग्रा. प्रति ली. पानी में) का 15 दिनों के अन्तराल पर दो बार छिड़काव करें।
mYVk l[kk ;k Mkbcd	टहनियों के रोगग्रस्त भाग की 7.5–10 सें.मी. नीचे से कटाई के पश्चात् कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 0.3% (3 ग्रा प्रति ली. पानी में) का अक्टूबर–नवम्बर माह में 15 दिनों के अन्तराल पर दो–तीन छिड़काव करें तथा कटे भाग पर उक्त दवाई का लेप भी लगायें।
'kVh ekYM	घुलनशील गंधक (0.2%) + मोनोक्रोटोफॉस (0.5%) + गोंद (0.3%) का घोल बनाकर लक्षण दिखाई देने पर 10–15 दिनों के अन्तराल पर तीन बार छिड़काव करना चाहिए।
nfgd fodkj ic/ku	
xEek fodkj ¼ekyQkje'ku½	कम प्रकोप वाले बागों में जनवरी में आये बौर तोड़ दें। अधिक प्रकोप वाले बागों में अक्टूबर माह में एन.ए.ए. 200 पी.पी.एम (900 मि.ली. प्रति 200 ली. पानी में) का छिड़काव करें एवं विकारयुक्त बौरों को तोड़ दें।
Qyk dk fxjuk	एन.ए.ए.का 20 पी.पी.एम. (90 मि.ली. प्रति 200 ली. पानीं) का छिड़काव फलों के मटर के दाने के बराबर होने की अवस्था पर करें।

Yk[kd½ डॉ. दुष्यंत मिश्र, डॉ. चन्द्रभानु, डॉ. पूनम कश्यप, डॉ. पीयूष पुनिया एवं डॉ. सुनील कुमार
ldyu ,o lEiknu½ डॉ. अनिल कुमार एवं डॉ. आजाद सिंह पंवार
çdk'ku½ निदेशक, भारतीय कृषि प्रणाली अनुसंधान संस्थान, मोदीपुरम, मेरठ (उ.प्र.)
Qku½ 0121–2888711, 2888611 **QDl½** 0121–2888546
bl ey½ directoriifsr@yahoo.com **oc lkbV½** www.iifsr.res.in